WK 07 (047-318)
FEBRUARY • THURSDAY 16

परिहास सम्बन्ध
Joking Relations

नातेदारी व्यवस्था के अन्तर्गत परिहास-सम्बन्ध विभिन्न नातेदारी के बीच परिहार से बिलकुल भिन्न विशेषताएँ प्रदर्शित करते हैं। परिहास का अर्थ है, हँसी-मजाक अथवा व्यंग्य। इनका तात्पर्य है कि नातेदारी व्यवस्था में कुछ स्वजन ऐसे होते हैं जिनके बीच घनिष्ठता के सम्बन्धों को स्वीकार किया जाता है तथा उन्हें एक-दूसरे से हँसी-मजाक करने अथवा काफी सीमा तक स्वतन्त्र व्यवहार करने की अनुमति दी जाती है अर्थात जीजा-साली, देवर-भाभी, ननद-भाभी, मामा-भान्जा दादी-पोता तथा चाचा-भतीजा आदि अनेक ऐसे सम्बन्ध हैं जिनमें हँसी-मजाक के सम्बन्धों की प्रधानता होती है तथा दोनों में से प्रत्येक पक्ष के द्वारा एक-दूसरे की बात का बुरा न मानने की आशा की जाती है।

उदाहरण के लिए मैलेनेशिया की जनजातियों में चाचा-भतीजे के बीच परिहास-सम्बन्धों की प्रधानता है। भतीजा चाचा की सम्पत्ति का किस प्रकार भी प्रयोग करे, बदले में चाचा बुरा नहीं मान सकता। अफ्रीका की तोंगा जनजाति में मामा-भान्जे, ट्रोब्रियण्ड द्वीप के निवासियों में भी मामा-भान्जे तथा भारत की औरांव तथा बैगा जनजातियों में दादी-पोते के बीच परिहास-सम्बन्धों की मान्यता दी जाती है।

परिहास-सम्बन्धों को भी अनेक कारणों के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है। रिवर्स का विचार है कि प्रारम्भिक युग में फुफेरे और ममेरे भाई-बहिनों के बीच विवाह सम्बन्धों की अनुमति थी जिसके फलस्वरूप उनके बीच परिहास-सम्बन्धों की अनुमति प्रदान की गयी।

वेस्टरमार्क ने इस कारण को अस्वीकार करते हुए कहा है कि परिहास-सम्बन्धों के द्वारा उन व्यक्तियों के बीच घनिष्ठता बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता है जिनमें विवाह-सम्बन्ध स्थापित होने की सम्भावना की जाती है।

जीजा - साली और देवर - भाभी के बीच परिहास - सम्बन्धों का विकास इसी कारण हुआ है। ब्राउन ने विवाह - सम्बन्ध की सम्भावना को पर्याप्त न मानते हुए परिहास - सम्बन्धों को मित्रता के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया है। केवल इसी आधार पर चाचा-भतीजे तथा मामा-भान्जे के बीच परिहास - सम्बन्धों के कारण को स्पष्ट किया जा सकता है। इसके पश्चात भी इनमें से कोई कारण दादी-पोते के बीच पाये जाने वाले परिहास - सम्बन्धों के कारण को स्पष्ट नहीं करता। इस दृष्टिकोण से यह मान लेना उचित होगा कि परम्परागत रूप से जिन दो पक्षों के बीच भी स्नेहपूर्ण सामाजिक अन्तःक्रिया को बढ़ाना उचित समझा गया, उनके बीच परिहास - सम्बन्धों की अनुमति प्रदान कर दी गयी।

⇒ **माध्यमिक सम्बोधन (Teknonymy)** → माध्यमिक सम्बोधन नातेदारी व्यवस्था से सम्बन्धित एक विशेष रीति है जो वास्तव में परिहास का ही एक विशेष स्वरूप है। इसके अनुसार एक व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वह अपने कुछ सम्बन्धियों को सम्बोधित करने अथवा पुकारने के लिए उनका नाम न ले बल्कि किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से उसे सम्बोधित करे।

जनजातियों में माध्यमिक सम्बोधन जैसी रीतियों के प्रचलन को सर्वप्रथम टायलर ने ज्ञात करके मानवशास्त्रीय विवेचन में इसका प्रयोग आरम्भ किया। इसके बाद अनेक देशों में जनजातियों से सम्बन्धित जो अध्ययन किये गये उनमें माध्यमिक सम्बोधन की रीति का व्यापक रूप से प्रचलन पाया गया। भारत में अनेक जनजातियों में कुछ विशेष सम्बन्धियों को सम्बोधित करने के लिए तरह-तरह के

माध्यमिक सम्बोधनों का उपयोग किया गया है। हमारी ग्रामीण संस्कृति भी बहुत कुछ जनजातीय विशेषताओं से प्रभावित है, इसलिए ग्रामीण समुदायों में आज भी पत्नी के लिए अपने पति का नाम लेना अथवा विवाहित स्त्रियों द्वारा अपने पति के परिवार में बड़े लोगों के नाम का उच्चारण करना वर्जित है। उदाहरण के लिए थारू जनजाति में स्त्रियों की स्थिति पुरुषों से उच्च होने के बाद भी स्त्रियाँ अपने पति, सास, श्वसुर, जेठ तथा अधिक आयु के अन्य नातेदारों के नाम का उच्चारण नहीं करतीं।

माध्यमिक सम्बोधन की रीति के प्रचलन को भी अनेक कारणों के आधार पर स्पष्ट किया गया है। टायलर का विचार है कि माध्यमिक सम्बोधन का प्रचलन मातृसत्तात्मक परिवार-व्यवस्था का परिणाम है। ऐसे परिवारों में स्त्रियों की सत्ता को पुरुषों से उच्च समझा जाता था और पुरुष को एक बाहरी व्यक्ति समझकर उसे परिवार में कोई विशेष स्थिति प्रदान नहीं की जाती थी। इस प्रकार पुरुषों से अपनी दूरी दिखाने के लिए उन्हें माध्यमिक सम्बोधनों के द्वारा पुकारा जाने लगा। बाद में पितृसत्तात्मक परिवार-व्यवस्था प्रभावपूर्ण हो जाने के बाद भी माध्यमिक सम्बोधनों का प्रचलन बना रहा।

लोवी ने टायलर के इस मत को स्वीकार नहीं किया है। लोवी का कथन है कि कुछ समाजों में माध्यमिक सम्बोधनों का प्रचलन इस कारण हुआ कि वहाँ स्त्रियों की स्थिति पुरुषों से निम्न है जबकि अनेक जनजातियों का शब्द-भण्डार इतना सीमित है कि सभी सम्बन्धियों के लिए पृथक-पृथक संज्ञाओं के द्वारा सम्बोधित नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए होपी जनजाति में शब्दों की कमी के कारण ही माध्यमिक सम्बोधन जैसी रीति का प्रचलन हुआ है। अनेक मानवशास्त्रियों ने इसे आदर और सम्मान से जोड़ा है।